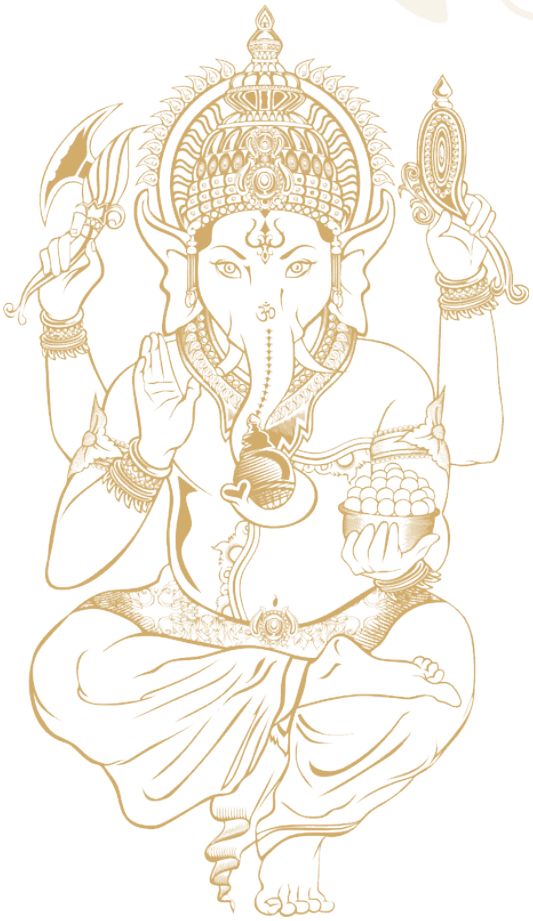

Mr. Vedika Kumari

21 Oct 2021

02:53 AM

Ranchi

Model: Web-MyKundli

Order No: 120843101

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**20-21/10/2021**
दिन	बुध-गुरुवार
जन्म समय	**02:53:00 घंटे**
इष्ट	52:42:06 घटी
स्थान	**Ranchi**
राज्य	Bihar
देश	India

अक्षांश	23:22:00 उत्तर
रेखांश	85:20:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:11:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	03:04:20 घंटे
वेलान्तर	00:15:14 घंटे
साम्पातिक काल	05:02:33 घंटे
सूर्योदय	05:48:09 घंटे
सूर्यास्त	17:18:35 घंटे
दिनमान	11:30:26 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	03:32:40 तुला
लग्न के अंश	22:40:40 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**मेष - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**अश्विनी - 2**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	वज्र
करण	बालव
गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	सिंह
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	चे-चेतना
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	तुला

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1943	आश्विन	29
पंजाबी	संवत : 2078	कार्तिक	5
बंगाली	सन् : 1428	कार्तिक	4
तमिल	संवत : 2078	आइपसी	5
केरल	कोल्लम : 1197	तुलम	5
नेपाली	संवत : 2078	कार्तिक	5
चैत्रादि	संवत : 2078	कार्तिक	शुक्ल 1
कार्तिकादि	संवत : 2078	आश्विन	शुक्ल 1

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 15
तिथि समाप्ति काल _____: 20:26:30
जन्म तिथि _____: 1
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: रेवती
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 14:01:34 घंटे
जन्म योग _____: अश्विनी
सूर्योदय कालीन योग _____: हर्षण
योग समाप्ति काल _____: 20:38:35 घंटे
जन्म योग _____: वज्र
सूर्योदय कालीन करण _____: विष्टि
करण समाप्ति काल _____: 07:41:28 घंटे
जन्म करण _____: बालव
भयात _____: 32:08:34
भभोग _____: 65:38:08
भोग्य दशा काल _____: केतु 3 वर्ष 6 मा 21 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मृग
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

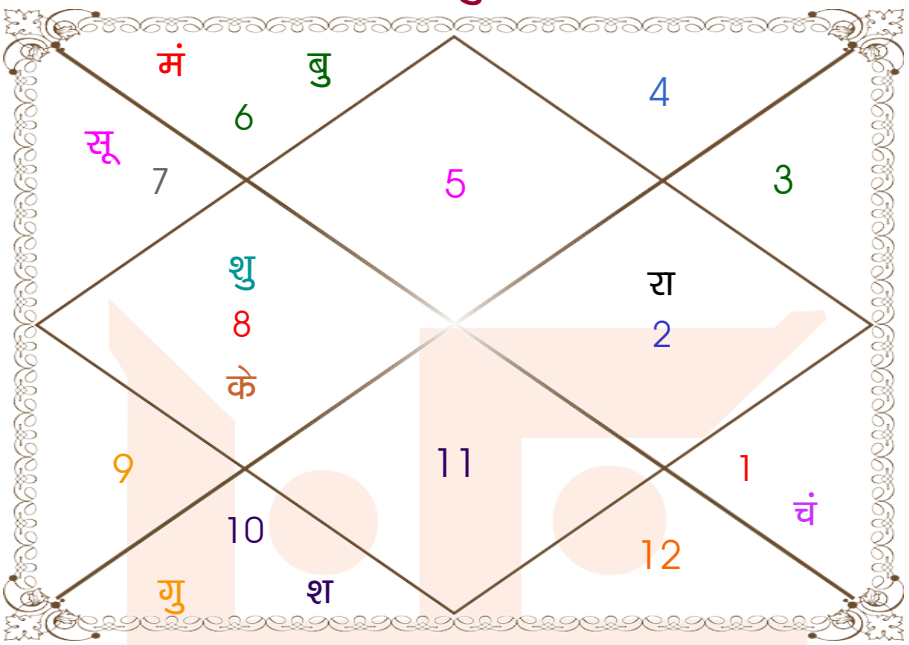

चन्द्र कुंडली

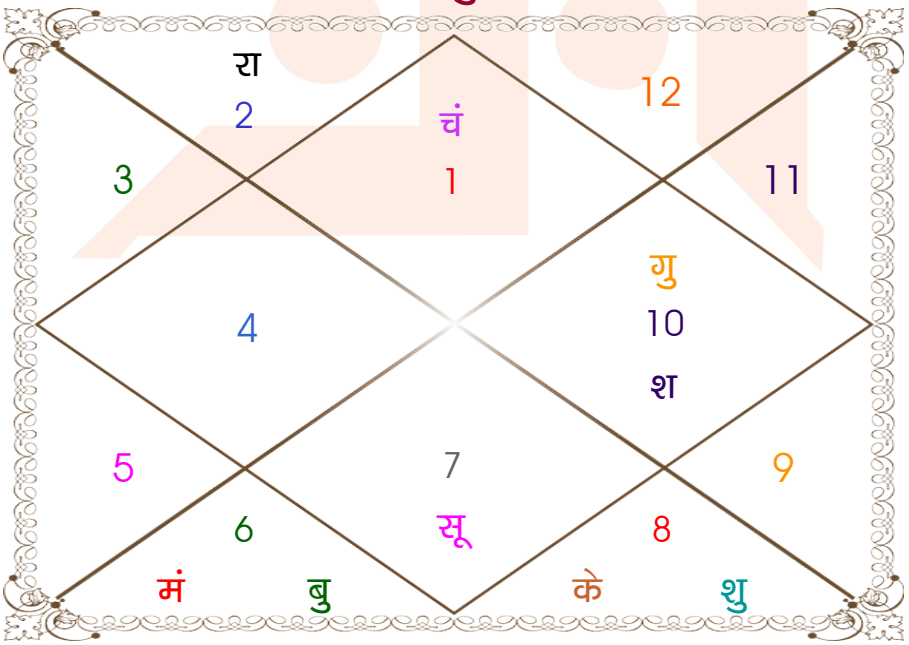

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

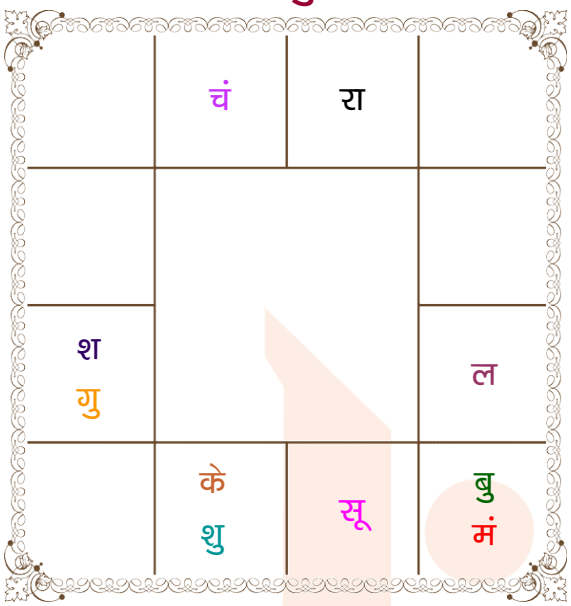

लग्न कुंडली

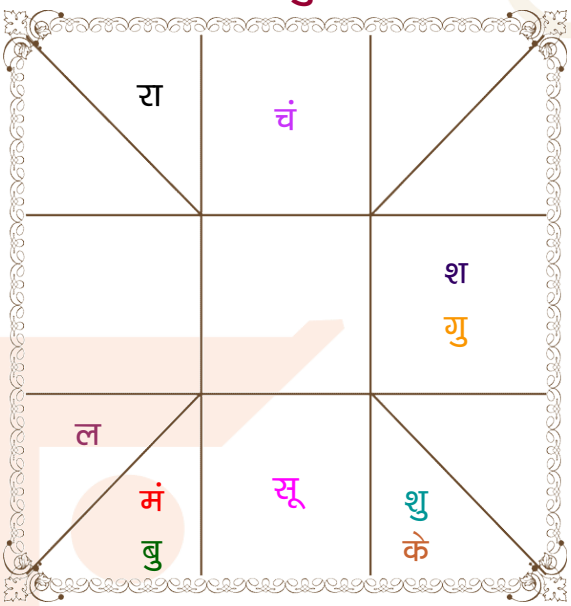

विंशोत्तरी
केतु 3वर्ष 6मा 21दि

केतु

21/10/2021

13/05/2138

केतु	12/05/2025
शुक्र	12/05/2045
सूर्य	13/05/2051
चन्द्र	12/05/2061
मंगल	12/05/2068
राहु	12/05/2086
गुरु	13/05/2102
शनि	13/05/2121
बुध	13/05/2138

योगिनी
भ्रामरी 2वर्ष 0मा 12दि

भद्रिका

02/11/2023

01/11/2028

भद्रिका	13/07/2024
उल्का	13/05/2025
सिद्धा	03/05/2026
संकटा	13/06/2027
मंगला	03/08/2027
पिंगला	12/11/2027
धान्या	13/04/2028
भ्रामरी	01/11/2028

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	22:40:40	329:49:04	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	---
सूर्य			तुला	03:32:40	00:59:38	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	नीच राशि
चंद्र			मेष	06:33:22	12:11:22	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	सम राशि
मंगल		अ	कन्या	29:21:30	00:39:54	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	शत्रु राशि
बुध			कन्या	16:25:40	00:24:00	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	मूलत्रिकोण
गुरु			मक	28:11:03	00:00:32	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	नीच राशि
शुक्र			वृश्चि	20:14:35	01:02:46	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	सम राशि
शनि			मक	12:48:08	00:00:59	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	स्वराशि
राहु	व		वृष	07:50:00	00:04:16	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
केतु	व		वृश्चि	07:50:00	00:04:16	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	केतु	मित्र राशि
हर्ष	व		मेष	19:14:26	00:02:21	भरणी	2	2	मंगल	शुक्र	राहु	---
नेप	व		कुंभ	26:42:23	00:01:14	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	---
प्लूटो			मक	00:12:24	00:00:25	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	राहु	---
दशम भाव			वृष	22:37:12	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	शुक्र	--

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:09:25

लग्न-चलित

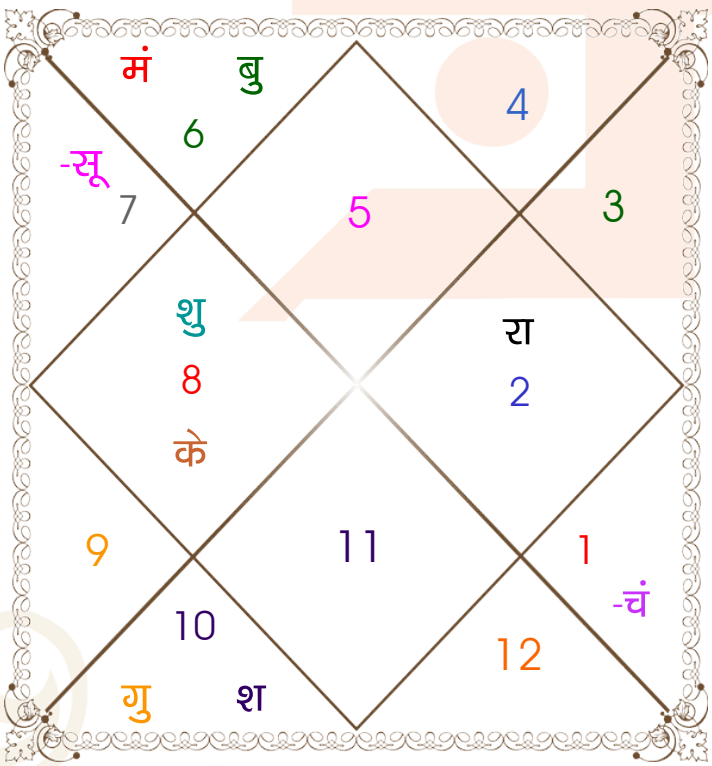

चन्द्र कुंडली

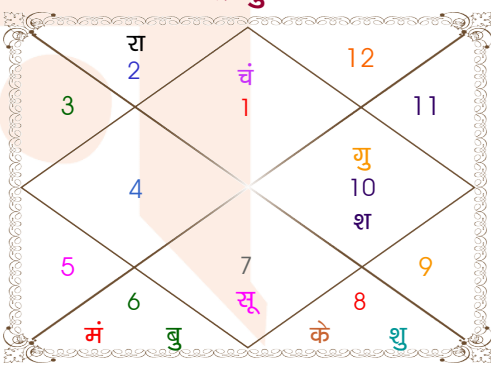

नवमांश कुंडली

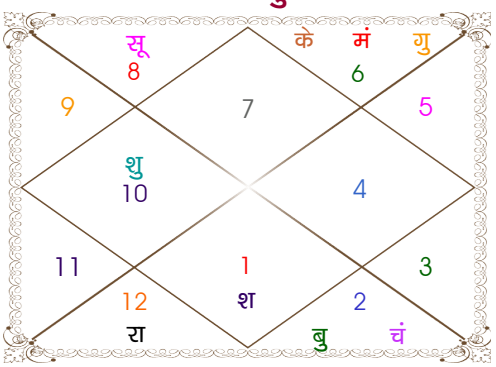

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	07:40:05	सिंह	22:40:40
2	कन्या	07:40:05	कन्या	22:39:30
3	तुला	07:38:56	तुला	22:38:21
4	वृश्चिक	07:37:47	वृश्चिक	22:37:12
5	धनु	07:37:47	धनु	22:38:21
6	मकर	07:38:56	मकर	22:39:30
7	कुम्भ	07:40:05	कुम्भ	22:40:40
8	मीन	07:40:05	मीन	22:39:30
9	मेष	07:38:56	मेष	22:38:21
10	वृष	07:37:47	वृष	22:37:12
11	मिथुन	07:37:47	मिथुन	22:38:21
12	कर्क	07:38:56	कर्क	22:39:30

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	22:40:40
2	कन्या	20:57:12
3	तुला	21:29:21
4	वृश्चिक	22:37:12
5	धनु	23:24:27
6	मकर	23:37:28
7	कुम्भ	22:40:40
8	मीन	20:57:12
9	मेष	21:29:21
10	वृष	22:37:12
11	मिथुन	23:24:27
12	कर्क	23:37:28

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती

चलित कुंडली

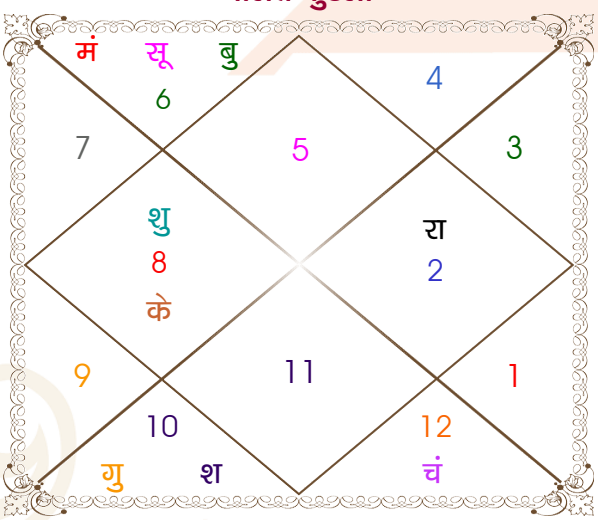

भाव कुंडली

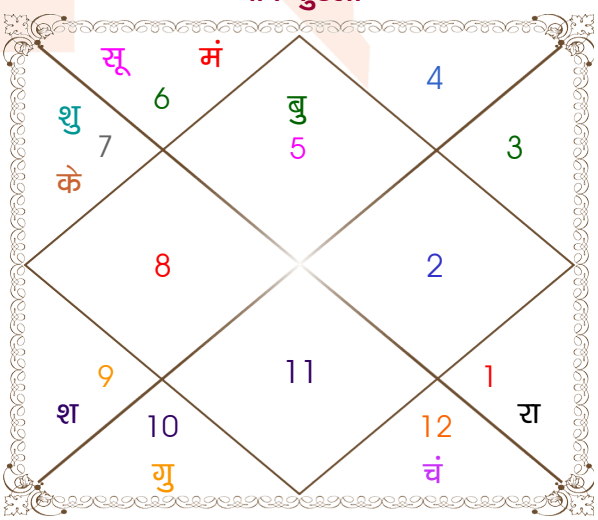

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 6 मास 21 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
21/10/2021		12/05/2025		12/05/2045		13/05/2051		12/05/2061	
12/05/2025		12/05/2045		13/05/2051		12/05/2061		12/05/2068	
	00/00/0000	शुक्र	11/09/2028	सूर्य	30/08/2045	चंद्र	12/03/2052	मंगल	08/10/2061
	00/00/0000	सूर्य	11/09/2029	चंद्र	28/02/2046	मंगल	11/10/2052	राहु	27/10/2062
	00/00/0000	चंद्र	13/05/2031	मंगल	06/07/2046	राहु	12/04/2054	गुरु	03/10/2063
	00/00/0000	मंगल	12/07/2032	राहु	31/05/2047	गुरु	12/08/2055	शनि	11/11/2064
	21/10/2021	राहु	13/07/2035	गुरु	18/03/2048	शनि	12/03/2057	बुध	08/11/2065
राहु	30/04/2022	गुरु	13/03/2038	शनि	28/02/2049	बुध	12/08/2058	केतु	06/04/2066
गुरु	06/04/2023	शनि	12/05/2041	बुध	05/01/2050	केतु	13/03/2059	शुक्र	06/06/2067
शनि	15/05/2024	बुध	12/03/2044	केतु	12/05/2050	शुक्र	11/11/2060	सूर्य	12/10/2067
बुध	12/05/2025	केतु	12/05/2045	शुक्र	13/05/2051	सूर्य	12/05/2061	चंद्र	12/05/2068

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
12/05/2068		12/05/2086		13/05/2102		13/05/2121		13/05/2138	
12/05/2086		13/05/2102		13/05/2121		13/05/2138		00/00/0000	
राहु	23/01/2071	गुरु	30/06/2088	शनि	16/05/2105	बुध	10/10/2123	केतु	10/10/2138
गुरु	18/06/2073	शनि	11/01/2091	बुध	24/01/2108	केतु	06/10/2124	शुक्र	10/12/2139
शनि	24/04/2076	बुध	18/04/2093	केतु	04/03/2109	शुक्र	07/08/2127	सूर्य	16/04/2140
बुध	11/11/2078	केतु	25/03/2094	शुक्र	04/05/2112	सूर्य	12/06/2128	चंद्र	15/11/2140
केतु	30/11/2079	शुक्र	23/11/2096	सूर्य	16/04/2113	चंद्र	12/11/2129	मंगल	13/04/2141
शुक्र	29/11/2082	सूर्य	11/09/2097	चंद्र	15/11/2114	मंगल	09/11/2130	राहु	22/10/2141
सूर्य	24/10/2083	चंद्र	11/01/2099	मंगल	25/12/2115	राहु	28/05/2133		00/00/0000
चंद्र	24/04/2085	मंगल	18/12/2099	राहु	31/10/2118	गुरु	03/09/2135		00/00/0000
मंगल	12/05/2086	राहु	13/05/2102	गुरु	13/05/2121	शनि	13/05/2138		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 6 मा 26 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु	
12/05/2025		11/09/2028		11/09/2029		13/05/2031		12/07/2032	
11/09/2028		11/09/2029		13/05/2031		12/07/2032		13/07/2035	
शुक्र	01/12/2025	सूर्य	29/09/2028	चंद्र	01/11/2029	मंगल	07/06/2031	राहु	23/12/2032
सूर्य	31/01/2026	चंद्र	29/10/2028	मंगल	06/12/2029	राहु	09/08/2031	गुरु	18/05/2033
चंद्र	12/05/2026	मंगल	20/11/2028	राहु	08/03/2030	गुरु	05/10/2031	शनि	08/11/2033
मंगल	22/07/2026	राहु	14/01/2029	गुरु	28/05/2030	शनि	12/12/2031	बुध	12/04/2034
राहु	21/01/2027	गुरु	03/03/2029	शनि	01/09/2030	बुध	10/02/2032	केतु	15/06/2034
गुरु	02/07/2027	शनि	30/04/2029	बुध	26/11/2030	केतु	06/03/2032	शुक्र	15/12/2034
शनि	11/01/2028	बुध	21/06/2029	केतु	01/01/2031	शुक्र	16/05/2032	सूर्य	07/02/2035
बुध	02/07/2028	केतु	12/07/2029	शुक्र	12/04/2031	सूर्य	06/06/2032	चंद्र	10/05/2035
केतु	11/09/2028	शुक्र	11/09/2029	सूर्य	13/05/2031	चंद्र	12/07/2032	मंगल	13/07/2035

शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य	
13/07/2035		13/03/2038		12/05/2041		12/03/2044		12/05/2045	
13/03/2038		12/05/2041		12/03/2044		12/05/2045		30/08/2045	
गुरु	19/11/2035	शनि	12/09/2038	बुध	06/10/2041	केतु	06/04/2044	सूर्य	18/05/2045
शनि	22/04/2036	बुध	23/02/2039	केतु	05/12/2041	शुक्र	16/06/2044	चंद्र	27/05/2045
बुध	07/09/2036	केतु	01/05/2039	शुक्र	27/05/2042	सूर्य	07/07/2044	मंगल	02/06/2045
केतु	02/11/2036	शुक्र	10/11/2039	सूर्य	17/07/2042	चंद्र	12/08/2044	राहु	19/06/2045
शुक्र	14/04/2037	सूर्य	07/01/2040	चंद्र	12/10/2042	मंगल	06/09/2044	गुरु	03/07/2045
सूर्य	02/06/2037	चंद्र	12/04/2040	मंगल	11/12/2042	राहु	09/11/2044	शनि	21/07/2045
चंद्र	22/08/2037	मंगल	19/06/2040	राहु	15/05/2043	गुरु	04/01/2045	बुध	05/08/2045
मंगल	17/10/2037	राहु	09/12/2040	गुरु	30/09/2043	शनि	13/03/2045	केतु	12/08/2045
राहु	13/03/2038	गुरु	12/05/2041	शनि	12/03/2044	बुध	12/05/2045	शुक्र	30/08/2045

सूर्य - चंद्र		सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि	
30/08/2045		28/02/2046		06/07/2046		31/05/2047		18/03/2048	
28/02/2046		06/07/2046		31/05/2047		18/03/2048		28/02/2049	
चंद्र	14/09/2045	मंगल	08/03/2046	राहु	25/08/2046	गुरु	09/07/2047	शनि	12/05/2048
मंगल	25/09/2045	राहु	27/03/2046	गुरु	07/10/2046	शनि	24/08/2047	बुध	30/06/2048
राहु	22/10/2045	गुरु	13/04/2046	शनि	28/11/2046	बुध	05/10/2047	केतु	21/07/2048
गुरु	15/11/2045	शनि	03/05/2046	बुध	14/01/2047	केतु	22/10/2047	शुक्र	16/09/2048
शनि	14/12/2045	बुध	21/05/2046	केतु	02/02/2047	शुक्र	09/12/2047	सूर्य	04/10/2048
बुध	09/01/2046	केतु	29/05/2046	शुक्र	29/03/2047	सूर्य	24/12/2047	चंद्र	02/11/2048
केतु	20/01/2046	शुक्र	19/06/2046	सूर्य	14/04/2047	चंद्र	17/01/2048	मंगल	22/11/2048
शुक्र	19/02/2046	सूर्य	26/06/2046	चंद्र	12/05/2047	मंगल	03/02/2048	राहु	13/01/2049
सूर्य	28/02/2046	चंद्र	06/07/2046	मंगल	31/05/2047	राहु	18/03/2048	गुरु	28/02/2049

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	9
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	86%	धन, भाग्योदय, सुख
माणिक्य	सूर्य	77%	पराक्रम, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	74%	धन, धनार्जन
हीरा	शुक्र	73%	सुख, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
गोमेद	राहु	70%	व्यावसायिक उन्नति, सुख
लहसुनिया	केतु	69%	सुख, धन
मोती	चंद्र	53%	भाग्योदय, कम खर्च
पुखराज	गुरु	34%	शत्रु व रोग, सन्तति कष्ट, दुर्घटना
नीलम	शनि	0%	शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट

रत्न की शुभता

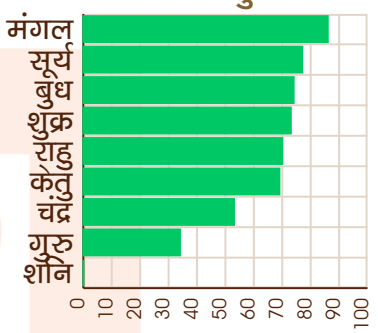

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	12/05/2025	64%	31%	92%	74%	34%	80%	0%	58%	81%
शुक्र	12/05/2045	64%	31%	86%	80%	34%	86%	0%	77%	75%
सूर्य	13/05/2051	89%	59%	92%	74%	47%	61%	0%	58%	56%
चंद्र	12/05/2061	83%	66%	86%	80%	34%	73%	0%	58%	56%
मंगल	12/05/2068	83%	59%	98%	61%	47%	73%	0%	58%	75%
राहु	12/05/2086	64%	31%	73%	74%	34%	80%	0%	83%	56%
गुरु	13/05/2102	83%	59%	92%	61%	55%	61%	0%	70%	69%
शनि	13/05/2121	64%	31%	73%	80%	34%	80%	2%	77%	56%
बुध	13/05/2138	83%	31%	86%	86%	34%	80%	0%	70%	69%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/05/2086-21/05/2086	08/02/2087-18/07/2088	31/10/2088-05/04/2089
साढेसाती तृतीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088	05/04/2089-19/09/2090	25/10/2090-21/05/2091
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/07/2093-18/08/2095	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	03/12/2102-29/11/2105	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	व्यावसायिक उन्नति
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सुख हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी। यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगी।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव पर होने से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगी। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराक्रम से भाग्य का निर्माण करेंगी तथा जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगी।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगी तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगी साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए। इससे आप

प्रसन्नतापूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगी तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगी।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीच का होकर षष्ठ भाव में स्थित है।
- पंचम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

तृतीय भाव में सूर्य हो तो जातक, सरकार से सम्मान प्राप्त, कवि, भाई और सम्बन्धियों के कारण दुःखी, पराक्रमी, प्रतापशाली, लब्धप्रतिष्ठ एवं बलवान् होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील,धर्मात्मा. सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में स्थित है। अतः आपकी माता जी का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी दीर्घ रहेंगी। माता की आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगी तथा जीवन में उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख संसाधनों को प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगी तथा आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य सहायता को देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं सम्मान पूर्वक उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। साथ ही आप आजीवन उनकी सुख सुविधा के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी। आप एक दूसरें से हमेशा सहमत रहेंगी एवं मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। अतः आपके परस्पर संबंध मधुरता से युक्त रहेंगे इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए

शुभ रहेंगी।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यों में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

बुध

द्वितीयभाव में बुध हो तो जातक सुखी, सुन्दर, वक्ता, साहसी, सत्कार्यकारक, संही, दलाल या वकील का पेशा करने वाला, मिष्टाभभोजी, गुणी एवं मितव्ययी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मी, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी, ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

शनि

षष्ठभाव में शनि हो तो जातक बलवान्, आचारहीन, व्रणी, जातिविरोधी, श्वासरोगी, कण्ठरोगी, योगी, शत्रुहन्ता भोगी एवं कवि होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र
(12/05/2025 - 12/05/2045)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 12/05/2025 को आरम्भ और 12/05/2045 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है। यह मीन राशि में उच्च का और कन्या में निम्न का होता है। यह स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद आनन्द तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्म कुण्डली के चतुर्थ भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि दशम भाव पर है और इस भाव पर इसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। चतुर्थ भाव माता, भवन, घरेलू वातावरण, निजी मामलों, गुप्त जीवन, वाहन, उद्यान, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, जल, दूध, नदी तथा झील का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र चतुर्थ भाव में स्थित है और भाव को प्रबलित कर रहा है जो सुख स्थान का भाव है। इसके फलस्वरूप इस दशा काल में आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी तथा आप सामान्य रूप से जीवन का आनन्द लेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र चतुर्थ भाव में भाव को प्रबलित कर रहा है। यह अचल संपत्ति और वाहन का भाव भी है। इस दशा काल में आप एक नया घर या नई गाड़ी ले सकते हैं। आपकी जीवन चर्या में उन्नति तथा आनन्द में वृद्धि होगी।

व्यवसाय :

शुक्र, एक योग कारक ग्रह, चतुर्थ भाव में स्थित है और आपकी जन्म कुण्डली के दशम भाव को देख रहा है, जो जीवन चर्या और व्यसाय का द्योतक है। इस दशा काल में आप जमीन-जायदाद के लेन-देन में व्यस्त रहेंगे और इसी से संबंधित व्यवसाय करेंगे। आपकी माता भी आपके व्यावसायिक जीवन को विकसित करने में सहायक होंगी।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन उत्साहपूर्ण और मैत्रीपूर्ण होगा। आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे। आप भावुक होने के साथ-साथ धनवान, आदरणीय, और खुशहाल होंगे। आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर होगा तथा आप परम्परा और मूल्यों का आदर करेंगे।

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र
(12/05/2025 - 11/09/2028)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 12/05/2025 को प्रारंभ होकर 12/05/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 12/05/2025 को प्रारंभ होकर 11/09/2028 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। शुक्र विवाह, प्रेम और रति का कारक है। शुक्र शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 10वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके घर में सुख-शांति का वातावरण रहेगा। मित्रों से संबंध बेहतर होंगे। माता से मधुर संबंध रहेंगे। वाहन सुख रहेगा, जायदाद भी प्राप्त कर सकते हैं। धर्म में रुचि होगी। स्वयं को सफल महसूस करेंगे और संतुष्ट रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

- चींटिओं को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।

अंर्तदशा :- शुक्र - सूर्य
(11/09/2028 - 11/09/2029)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 12/05/2025 को प्रारंभ होकर 12/05/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 11/09/2028 को प्रारंभ होकर 11/09/2029 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

इस अवधि में आपके घर में प्रसन्नता का वातावरण व्याप्त रहेगा। अधिकारीवर्ग से संपर्क लाभदायी रहेगा। हर क्षेत्र में सफलता मिलेगी, साहसी बनेंगे। तृतीय भाव में स्थित सूर्य बहुत शुभ होता है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के निम्न टोटके आजमायें।

1 दूध में शहद डालकर पियें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
2 गरीबों को आटा, गुड़ और तांबा दान करें।
3 सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- शुक्र - चन्द्र
(11/09/2029 - 13/05/2031)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 12/05/2025 को प्रारंभ हुई थी और 12/05/2045 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 11/09/2029 से प्रारंभ होकर 13/05/2031 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है।

नवम भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका मन अध्यात्म और ध्यान में लगेगा। समाज की भलाई के कार्य करेंगे, गुरु की सेवा करेंगे। मष्तिष्क में जिज्ञासाएं उभरेंगी, मन धर्म और आत्मा के उत्थान में लगा रहेगा। इससे आपके पिता और गुरु को भी लाभ होगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा का यंत्र धारण करें।